एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 04 (जुलाई-अगस्त, 2023)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

हाईब्रिड तोरई उत्पादन की वैज्ञानिक तकनीक एक लाभकारी व्यवसाय

(*रीतु नायक[1], राजश्री गाईन[1] एवं मनोज कुमार साहू[2])
[1]इ. गा. कृ. वि. वि., रायपुर, छतीसगढ़
[2]कृषि विज्ञान केन्द्र, रायपुर, छतीसगढ़
*संवादी लेखक का ईमेल पता: ritunayak18@gmail.com

कद्दू वर्गीय सब्जियों में तोरई का प्रमुख स्थान है, इसे खेतों और गृह वाटिकाओं में उगाया जाता है। तरोई से फाइबर मिलता है, जो पाचन में सहायक है, साथ इसमें विटामिन सी, जिंक, आयरन, राइबोफ्लोविन, मैग्निशियम एवं थाइमीन का अच्छा स्त्रोत है। कम मात्रा में संतृप्त वसा, कोलोस्ट्राल एवं कैलोरी के कारण वजन कम करने में सहायक है। हाइब्रीड तोरई की बीज अधिक महंगे होने के कारण किसान भाई अधिक उपयोग नहीं कर पाते हैं, लेकिन कृषि विज्ञान केन्द्र, रायपुर के प्रयास से हाइब्रिड तोरई का लाइसेंस, राष्ट्रीय बागवानी अनुसंधान संस्थान, बैंगलोर से लेकर संकर बीज उत्पादन का कार्य कृषि विज्ञान केन्द्र के प्रक्षेत्र व कृषकों के खेत में किया जा रहा है। ताकि कृषक स्वयं अपने खेत में बीज उत्पादन कर कम कीमत में संकर बीज प्राप्त कर अपनी आर्थिक स्थिति मजबूत कर सके।

जलवायुः– तोरई की खेती के लिये उष्ण तथा नमीयुक्त जलवायु उपयुक्त मानी गई है, तोरई के लिये 20 से 30 डिग्री सेंटीग्रेड तापमान उचित होता है।

भूमि एवं भूमि की तैयारीः– तोरई के लिये गहरी अच्छे जल निकास वाली बलुई या बलुई–दोमट मृदा उपयुक्त एवं पी.एच. मान 5.5–6.5 तक होना चाहिए।

- ❖ जमीन की 2–3 गहरी जुताई व डिस्क हेरो चलाकर भुरभुरी बनाकर पाटा चलाकर समतल कर ले, व पहली जुताई के पश्चात 20 – 25 टन प्रति हेक्टेयर गोबर की खाद जमीन में मिला दें।
- ❖ यदि ड्रिप की सुविधा उपलब्ध है तो पुरे खेत की रिज मेकर से उपयुक्त दूरी 3 फीट कतार से कतार व क्यारी की ऊंचाई 15 से.मी. व चौड़ाई 60 से.मी. रखें।
- ❖ क्यारी बनाने के पश्चात् पालीथिन माल्चिंग (25–30 माइक्रान) को बिछाऐं व 90 से.मी. की पर गोल छेद बनायें।
- ❖ ड्रीप की व्यवस्था न होने पर 30 से.मी. चौड़ाई व बुवाई नाली 2 से 3 मीटर की दूरी पर बनायें।

उर्वरक प्रबंधनः– तोरई के लिये अनुशंसित उर्वरक 100 कि.ग्रा. नत्रजन, 60 कि.ग्रा. फास्फोरस व 100 कि.ग्रा. पोटाश है। नत्रजन व पोटाश की आधी मात्रा व फास्फोरस की पूरी मात्रा बीज बुवाई के समय डालें और आधी बची हुई नत्रजन व पोटाश की मात्रा को तीन भागों में 15 दिनों के अंतराल में देवें।

- ❖ फूल–फल आने की अवस्था में मैग्निशियम सल्फेट व अन्य सुक्ष्म तत्व (कॉम्बी–2) 200 ग्राम प्रति एकड़ प्रति सप्ताह चलायें।

बीज की बुवाई व समयः

- ❖ बीज की बुवाई के लिये 15 अक्टूबर से 15 नवंबर तक का समय उपयुक्त है, सर्वप्रथम बीज को फफुंदी नाशक दवाई से उपचार करके प्रो ट्रे में या 4'x6' आकार के पॉलीथिन बैग में 3:2:1 का माध्यम बनाकर (कोकोपीट वर्मीकम्पोस्ट व वर्मीकुलाइट) प्रो ट्रे में भरें व 2 बीज प्रति सेल में डालें व सिंचाई करें तथा सफेद शेड नेट में रखें।
- ❖ यदि प्रो ट्रे उपलब्ध न हो तो सीधे खेत में 2–3 बीज प्रति हिल बुआई कर सिंचाई करें।

बीज दरः– नारी लाईन 1 कि.ग्रा. व नर लाईन 250 कि.ग्रा. प्रति एकड, बीज बुआई के समय कतार से कतार की दूरी 1.5–3.0 मी एवं पौध से पौध की दूरी 60–120 सेमी रखा जाता है।

सिंचाईः– बरसात के मौसम मे शुरूवाती अवधि के दौरान सिंचाई की आवश्यकता हो सकती है। ग्रीष्मकालीन फसल की नियमित सिंचाई अवश्य करें। ठंड मौसम में दो से तीन दिनों के अंतराल में व जमीन में नमी के हिसाब से सिंचाई करें।

निराई गुड़ाईः– पौध बढ़वार के शुरूवाती दिनों में खरपतवार नियंत्रण के लिए उथली गुड़ाई की जाती है, निराई–गुड़ाई के समय पौधों पर मिट्टी चढ़ाना चाहिए। पौध की उचित बढ़वार हेतु बांस की डंडियो का उपयुक्त सहारा देना चाहिए।

फलों की तुड़ाई व उपजः– फलों की तुड़ाई तब की जाती है जब वे कोमल और अपरिपक्व होते है। तोरई के बीज उत्पादन हेतु फल के पूर्णतः भूरा पड़ जाने पर तुडाई करे व धूप मे सुखाकर बीज को अलग कर लें। पालीथीन बैग या कंटेनर में भरकर शुष्क स्थान में भण्डारण करें। तोरई का संकर बीज उत्पादन 100 से 120 कि.ग्रा. प्रति एकड़ प्राप्त होता है।

कीट एवं रोग प्रबंधनः–

तोरई के कीटः– कद्दू का लाल भृंग, लीफ माइनर, सफेद मक्खी व फल भेदक इल्ली प्रमुख है।

नियंत्रणः– नियंत्रण हेतु नीम आधारित कीटनाशक दवाई व इमिडाक्लोप्रीड एवं थायोमेथोक्जाम 1.5 ग्रा. प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।

तोरई के मुख्य रोगः– एन्थ्रोक्नोज, भभूतिया एवं आद्रगलन व मोजेक रोग का प्रकोप होता है।

नियंत्रणः– रोग प्रबंधन हेतु कार्वेन्डाजिम या केराथेन पाउडर 2 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।

लागत व लाभ अनुपातः– प्रति एकड़ व्यय रू. 1,50,000/–, सकल आय रू. 4,50,000/–, शुद्ध आय रू.3,00,000/– प्राप्त होता है।